INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

थॉमस हॉब्स के सामाजिक समझौता सिद्धांत एवं राज्य की उत्पत्ति संबंधी अवधारणा का आलोचनात्मक विश्लेषण

(A Critical Analysis of Thomas Hobbes's Social Contract Theory and Concept of the Origin of the State)

डॉ. बृजेश स्वरुप सोनकर

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

कर्म क्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इटावा (उ.प्र.)

शोध सार (Abstract)

प्रस्तुत शोध-पत्र में थॉमस हॉब्स के सामाजिक समझौता सिद्धांत तथा राज्य की उत्पत्ति संबंधी अवधारणा का राजनीतिक, दार्शनिक एवं आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। हॉब्स ने अपनी प्रसिद्ध कृति लेवायथन (Leviathan, 1651) में राज्य को किसी दैवी व्यवस्था का अनिवार्य परिणाम मानने के बजाय व्यक्तियों के बीच संपन्न सामाजिक समझौते से उत्पन्न कृत्रिम संस्था के रूप में प्रस्तुत किया। उनके अनुसार, प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य असुरक्षा, भय, प्रतिस्पर्धा और संघर्ष से घिरा रहता है। जीवन, स्वतंत्रता तथा संपत्ति की सुरक्षा के लिए व्यक्ति अपनी कुछ प्राकृतिक स्वतंत्रताओं का त्याग करके एक सर्वोच्च संप्रभु सत्ता की स्थापना करते हैं। यह सत्ता शांति एवं व्यवस्था बनाए रखने का आधार बनती है। प्रस्तुत अध्ययन में हॉब्स के मानव-स्वभाव संबंधी दृष्टिकोण, प्राकृतिक अवस्था, सामाजिक समझौते, संप्रभुता और राज्य की वैधता का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, उनके सिद्धांत की उपयोगिता तथा निरंकुश सत्ता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, लोकतंत्र और नागरिक अधिकारों से संबंधित सीमाओं का परीक्षण किया गया है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि हॉब्स का सिद्धांत आधुनिक राज्य की आवश्यकता और राजनीतिक सत्ता के औचित्य को समझने में महत्त्वपूर्ण है, किंतु स्वतंत्रता एवं सत्ता के संतुलन की दृष्टि से इसकी सीमाएँ भी स्पष्ट हैं।

मुख्य शब्द (Keywords): थॉमस हॉब्स, सामाजिक समझौता, प्राकृतिक अवस्था, राज्य की उत्पत्ति, संप्रभुता, राजनीतिक सत्ता, नागरिक स्वतंत्रता।

प्रस्तावना (Introduction)

राजनीतिक चिंतन के इतिहास में राज्य की उत्पत्ति, राजनीतिक सत्ता की वैधता, शासन के औचित्य तथा व्यक्ति और राज्य के पारस्परिक संबंधों का प्रश्न सदैव केंद्रीय महत्त्व रखता रहा है। राज्य केवल प्रशासनिक व्यवस्था या कानून लागू करने वाली संस्था नहीं है, बल्कि वह ऐसी राजनीतिक संरचना है जिसके माध्यम से समाज में शांति, सुरक्षा, न्याय और सामूहिक जीवन की व्यवस्था स्थापित की जाती है। इसलिए राजनीतिक दर्शन के प्रमुख प्रश्नों में यह जानना भी सम्मिलित है कि राज्य की आवश्यकता क्यों उत्पन्न होती है, राजनीतिक सत्ता को अधिकार कहाँ से

प्राप्त होता है तथा नागरिकों के लिए राज्य की आज्ञाओं का पालन करना किस आधार पर उचित माना जाता है। विभिन्न राजनीतिक विचारकों ने इन प्रश्नों के उत्तर अपने समय की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार प्रस्तुत किए हैं। इसी वैचारिक परंपरा में सामाजिक समझौता सिद्धांत ने राज्य की उत्पत्ति तथा राजनीतिक सत्ता की वैधता की व्याख्या करने में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया। प्राचीन एवं मध्यकालीन राजनीतिक विचारों में राज्य और शासन की वैधता को प्रायः दैवी इच्छा, धार्मिक मान्यताओं, नैतिक व्यवस्था अथवा परंपरागत अधिकारों से जोड़कर देखा जाता था। ऐसी मान्यताओं में शासक की सत्ता को कई बार ईश्वर-प्रदत्त या परंपरा से प्राप्त अधिकार के रूप में स्वीकार किया जाता था। आधुनिक राजनीतिक चिंतन के विकास के साथ राजनीतिक सत्ता की व्याख्या में परिवर्तन दिखाई देने लगा। विचारकों ने यह प्रश्न उठाया कि क्या राज्य की स्थापना को केवल दैवी विधान अथवा परंपरा के आधार पर समझा जा सकता है, या इसके पीछे मानवीय आवश्यकताओं, विवेक, सुरक्षा और पारस्परिक सहमति की भी निर्णायक भूमिका होती है। सामाजिक समझौता सिद्धांत इसी परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करता है। इस सिद्धांत के अनुसार, राज्य को व्यक्तियों के बीच स्थापित सहमति अथवा समझौते के आधार पर समझा जा सकता है। इस दृष्टिकोण ने राजनीतिक सत्ता को मानवीय तर्क और सामाजिक आवश्यकता से जोड़ते हुए आधुनिक राज्य संबंधी विचारों के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

थॉमस हॉब्स (Thomas Hobbes, 1588-1679) आधुनिक राजनीतिक दर्शन के प्रमुख विचारकों में से एक थे। उनका राजनीतिक चिंतन सत्रहवीं शताब्दी के इंग्लैंड की अस्थिर राजनीतिक परिस्थितियों से गहराई से प्रभावित था। उस समय इंग्लैंड में राजसत्ता और संसद के बीच संघर्ष, धार्मिक मतभेद, सत्ता के अधिकारों को लेकर विवाद तथा गृहयुद्ध जैसी घटनाओं ने राजनीतिक व्यवस्था की स्थिरता को गंभीर चुनौती दी। इन परिस्थितियों में यह प्रश्न विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हो गया कि जब समाज में विभिन्न समूहों के हितों और मान्यताओं में टकराव हो, तब शांति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए किस प्रकार की राजनीतिक सत्ता आवश्यक है। हॉब्स ने इन समस्याओं पर विचार करते हुए यह तर्क प्रस्तुत किया कि स्थायी शांति के लिए ऐसी सार्वजनिक सत्ता का होना आवश्यक है, जिसके निर्णयों को प्रभावी रूप से लागू किया जा सके। उनकी प्रसिद्ध कृति लेवायथन (Leviathan, 1651) में राज्य, संप्रभुता, कानून, प्राकृतिक अवस्था और सामाजिक समझौते से संबंधित विचारों का व्यवस्थित विवेचन मिलता है। हॉब्स के राजनीतिक दर्शन का आधार उनकी मानव-स्वभाव संबंधी अवधारणा है। उनके अनुसार, मनुष्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति, आत्मरक्षा और जीवन की सुरक्षा के प्रति स्वाभाविक रूप से सजग रहता है। मनुष्य की इच्छाएँ और हित हमेशा एक-दूसरे के अनुरूप नहीं होते; सीमित संसाधनों, प्रतिस्पर्धा तथा भविष्य के प्रति अनिश्चितता के कारण व्यक्तियों के बीच संघर्ष की संभावना उत्पन्न हो सकती है। हॉब्स यह भी मानते हैं कि मनुष्यों के बीच क्षमताओं की समानता ऐसी स्थिति पैदा करती है जिसमें कोई व्यक्ति स्वयं को पूर्णतः सुरक्षित नहीं मान सकता। अपेक्षाकृत कमजोर व्यक्ति भी दूसरे व्यक्ति के विरुद्ध सहयोग, रणनीति अथवा अन्य साधनों का उपयोग कर सकता है। परिणामस्वरूप, दूसरों की मंशा के प्रति संदेह और अपनी सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ सकती है। इस प्रकार हॉब्स के लिए राजनीतिक व्यवस्था की समस्या केवल मनुष्य की आक्रामक प्रवृत्तियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उस असुरक्षा से भी संबंधित है जो तब उत्पन्न होती है जब प्रत्येक व्यक्ति को अपनी रक्षा स्वयं करनी पड़ती है।

इसी संदर्भ में हॉब्स ने प्राकृतिक अवस्था (State of Nature) की अवधारणा प्रस्तुत की। प्राकृतिक अवस्था ऐसी काल्पनिक स्थिति है जिसमें कोई साझा राजनीतिक सत्ता अथवा सर्वोच्च प्राधिकार मौजूद नहीं होता, जो व्यक्तियों

के विवादों का अंतिम निर्णय कर सके और नियमों का पालन सुनिश्चित कर सके। ऐसी परिस्थिति में प्रत्येक व्यक्ति अपनी सुरक्षा के लिए स्वयं निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र होता है। किंतु जब सभी व्यक्तियों के पास अपनी रक्षा करने और अपने हितों की पूर्ति करने की स्वतंत्रता हो, तब पारस्परिक अविश्वास और संघर्ष की आशंका बढ़ जाती है। हॉब्स की दृष्टि में इस अवस्था की सबसे गंभीर समस्या केवल वास्तविक हिंसा नहीं, बल्कि हिंसा की निरंतर संभावना और उससे उत्पन्न असुरक्षा है। जब जीवन और उपलब्धियों की सुरक्षा सुनिश्चित न हो, तब व्यक्ति के लिए दीर्घकालीन योजनाएँ बनाना, आर्थिक गतिविधियों में निवेश करना और स्थायी सामाजिक सहयोग विकसित करना कठिन हो जाता है। इसलिए प्राकृतिक अवस्था की अवधारणा हॉब्स के दर्शन में राज्य की आवश्यकता को स्पष्ट करने वाला मूल आधार बन जाती है।

हॉब्स का यह तर्क नहीं है कि मनुष्य प्रत्येक परिस्थिति में केवल स्वार्थ से प्रेरित होकर ही कार्य करता है। उनके राजनीतिक सिद्धांत का केंद्रीय प्रश्न यह है कि जब व्यक्तियों के बीच पर्याप्त विश्वास और सुरक्षा उपलब्ध न हो, तब शांति की स्थायी व्यवस्था कैसे स्थापित की जा सकती है। इस समस्या के समाधान के लिए वे विवेक की भूमिका को महत्व देते हैं। मनुष्य यह समझ सकता है कि निरंतर संघर्ष की स्थिति उसके जीवन और हितों के लिए हानिकारक है तथा शांति की स्थापना सभी के लिए लाभकारी हो सकती है। हॉब्स के प्राकृतिक नियम इसी विवेकपूर्ण समझ से संबंधित हैं। शांति की खोज करना, जहाँ संभव हो वहाँ अपने कुछ अधिकारों को सीमित करना और पारस्परिक समझौतों का पालन करना इस दिशा में महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं। किंतु केवल नैतिक उपदेश या आपसी वचन स्थायी व्यवस्था की गारंटी नहीं दे सकते। यदि समझौते का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति को रोकने की कोई प्रभावी व्यवस्था न हो, तो दूसरे व्यक्तियों के लिए भी समझौते का पालन करना जोखिमपूर्ण हो सकता है। इसीलिए हॉब्स के अनुसार, शांति की स्थापना के लिए ऐसी सार्वजनिक सत्ता आवश्यक है जो नियमों को लागू कर सके और उल्लंघन की स्थिति में दंड देने की क्षमता रखती हो। यहीं से हॉब्स के सामाजिक समझौता सिद्धांत (Social Contract Theory) का विकास होता है। उनके अनुसार, व्यक्ति प्राकृतिक अवस्था की असुरक्षा से मुक्त होने के लिए परस्पर समझौते के माध्यम से एक राजनीतिक समुदाय का निर्माण करते हैं। वे अपनी कुछ प्राकृतिक स्वतंत्रताओं के प्रयोग को सीमित करते हुए किसी व्यक्ति अथवा सभा को संप्रभु अधिकार प्रदान करते हैं, ताकि वह सामूहिक सुरक्षा, कानून और शांति की व्यवस्था बनाए रख सके। इस प्रक्रिया में राज्य को मानवीय सहमति से निर्मित राजनीतिक संस्था के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। हॉब्स की अवधारणा में संप्रभु सत्ता स्वयं मूल समझौते का सामान्य पक्षकार नहीं होती; समझौता मुख्यतः उन व्यक्तियों के बीच होता है जो एक साझा सत्ता को अपने प्रतिनिधि और निर्णायक प्राधिकार के रूप में स्वीकार करते हैं। यही विशेषता उनके सिद्धांत को जॉन लॉक और जाँ-जाक रूसो जैसे अन्य सामाजिक समझौता विचारकों से अलग करती है।

हॉब्स के विचार में राज्य की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य शांति और सुरक्षा सुनिश्चित करना है। वे मानते हैं कि केवल व्यक्तियों की स्वतंत्रता की घोषणा कर देने से उनकी वास्तविक सुरक्षा सुनिश्चित नहीं हो जाती। यदि कानून लागू करने वाली प्रभावी सत्ता अनुपस्थित हो, तो शक्तिशाली व्यक्ति कमजोर व्यक्तियों के अधिकारों का उल्लंघन कर सकते हैं और सामाजिक जीवन अस्थिर हो सकता है। इस दृष्टि से हॉब्स राज्य को ऐसी संस्था के रूप में देखते हैं जो निजी शक्ति-संघर्षों को नियंत्रित करके एक साझा राजनीतिक व्यवस्था स्थापित करती है। उनके लिए संप्रभुता (Sovereignty) का अर्थ ऐसी सर्वोच्च सार्वजनिक शक्ति है जो कानूनों के निर्माण, न्यायिक निर्णयों, बाहरी

सुरक्षा और आंतरिक शांति के लिए आवश्यक अधिकार रखती है। उनका तर्क है कि यदि अंतिम निर्णय लेने की शक्ति इस प्रकार विभाजित हो जाए कि कोई भी प्राधिकार विवादों का समाधान न कर सके, तो राजनीतिक संघर्ष और अस्थिरता पुनः उत्पन्न हो सकती है। इसी कारण वे संप्रभु सत्ता की एकता और सर्वोच्चता पर बल देते हैं। हालाँकि, हॉब्स की संप्रभुता की अवधारणा उनके राजनीतिक दर्शन का सबसे प्रभावशाली और सबसे विवादास्पद पक्ष भी है। एक ओर, व्यापक अधिकारों से युक्त संप्रभु सत्ता सामाजिक अराजकता को रोकने, कानूनों को लागू करने और नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में सक्षम मानी जाती है। दूसरी ओर, यदि राजनीतिक सत्ता पर पर्याप्त संस्थागत नियंत्रण न हो, तो उसके दुरुपयोग और नागरिक स्वतंत्रताओं के हनन की आशंका भी उत्पन्न होती है। हॉब्स राजनीतिक व्यवस्था की स्थिरता को प्राथमिकता देते हैं और संप्रभु सत्ता के अधिकारों को व्यापक मानते हैं। इस कारण उनके सिद्धांत की आलोचना यह कहते हुए की जाती है कि इसमें शासक की जवाबदेही, सत्ता के विभाजन और नागरिकों के राजनीतिक प्रतिरोध के अधिकार को अपेक्षाकृत सीमित स्थान मिलता है। फिर भी, हॉब्स के विचारों का मूल्यांकन करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि उनका प्रमुख उद्देश्य निरंकुशता का समर्थन करना मात्र नहीं, बल्कि उस राजनीतिक संकट का समाधान खोजना था जिसमें साझा सत्ता के अभाव में समाज हिंसा और असुरक्षा की ओर बढ़ सकता है।

राजनीति विज्ञान में हॉब्स के सिद्धांत का महत्त्व इस बात में भी निहित है कि उन्होंने राज्य की आवश्यकता और राजनीतिक सत्ता के औचित्य को तार्किक आधार पर प्रस्तुत किया। उनके विचारों ने इस बहस को आगे बढ़ाया कि व्यक्ति की स्वतंत्रता और राज्य की शक्ति के बीच किस प्रकार का संबंध होना चाहिए। हॉब्स के लिए स्वतंत्रता का व्यावहारिक उपयोग तभी संभव है जब जीवन और सामाजिक व्यवस्था को पर्याप्त सुरक्षा प्राप्त हो; किंतु आधुनिक लोकतांत्रिक दृष्टिकोण यह भी रेखांकित करता है कि सुरक्षा के नाम पर राज्य की शक्ति को असीमित नहीं छोड़ा जा सकता। कानून का शासन, मौलिक अधिकार, न्यायिक स्वतंत्रता, लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व और सत्ता की जवाबदेही आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था के ऐसे तत्व हैं, जिनके आधार पर हॉब्स के सिद्धांत की उपयोगिता और सीमाओं का परीक्षण किया जा सकता है। हॉब्स के सामाजिक समझौता सिद्धांत की आलोचनात्मक समीक्षा करते समय अन्य विचारकों के दृष्टिकोणों से तुलना भी उपयोगी है। जॉन लॉक ने राज्य की स्थापना को प्राकृतिक अधिकारों–विशेषतः जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति–की रक्षा से जोड़ा तथा सीमित सरकार और शासक की जवाबदेही पर बल दिया। रूसो ने जनसत्ता और सामान्य इच्छा को राजनीतिक वैधता का आधार माना। इसके विपरीत, हॉब्स ने सामाजिक संघर्ष को नियंत्रित करने के लिए सर्वोच्च संप्रभु सत्ता की आवश्यकता को प्राथमिकता दी। इन विचारों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सामाजिक समझौता सिद्धांत केवल राज्य की उत्पत्ति की व्याख्या तक सीमित नहीं है, बल्कि यह स्वतंत्रता, समानता, सुरक्षा, नागरिक सहमति और राजनीतिक अधिकारों के बीच संबंधों पर व्यापक विमर्श भी प्रस्तुत करता है। वर्तमान राजनीतिक चिंतन में भी हॉब्स के विचारों की प्रासंगिकता बनी हुई है, क्योंकि राज्य की सुरक्षा-संबंधी भूमिका, कानून का प्रभावी क्रियान्वयन, सार्वजनिक व्यवस्था और राजनीतिक सत्ता की वैधता आज भी महत्त्वपूर्ण प्रश्न हैं। किसी भी राज्य से यह अपेक्षा की जाती है कि वह नागरिकों के जीवन, स्वतंत्रता और सार्वजनिक हितों की रक्षा करे। साथ ही, राज्य की प्रभावशीलता का मूल्यांकन केवल उसकी दंडात्मक क्षमता से नहीं, बल्कि इस आधार पर भी किया जाता है कि वह कानून के शासन, नागरिक अधिकारों और जवाबदेही को किस सीमा तक सुनिश्चित करता है। इस संदर्भ में हॉब्स का सिद्धांत एक ओर राजनीतिक व्यवस्था के लिए सक्षम सत्ता की

आवश्यकता को स्पष्ट करता है, तो दूसरी ओर उसकी व्यापक संप्रभुता की अवधारणा यह प्रश्न उठाती है कि सत्ता के दुरुपयोग को रोकने के लिए कौन-से संस्थागत प्रावधान आवश्यक हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र में थॉमस हॉब्स के सामाजिक समझौता सिद्धांत और राज्य की उत्पत्ति संबंधी अवधारणा का वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें उनके मानव-स्वभाव संबंधी विचारों, प्राकृतिक अवस्था, प्राकृतिक नियमों, सामाजिक समझौते और संप्रभुता की अवधारणा का परस्पर संबंध स्पष्ट किया गया है। साथ ही, इस बात का परीक्षण किया गया है कि हॉब्स द्वारा सुरक्षा और राजनीतिक स्थिरता को दिया गया महत्त्व किस सीमा तक उचित है तथा उनकी अवधारणा व्यक्तिगत स्वतंत्रता, लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व और संवैधानिक शासन की अपेक्षाओं के साथ किस प्रकार संगत या असंगत दिखाई देती है। इस प्रकार अध्ययन का उद्देश्य हॉब्स के सिद्धांत को केवल राज्य की उत्पत्ति की व्याख्या के रूप में प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि आधुनिक राजनीतिक दर्शन में उसकी वैचारिक उपलब्धियों, सीमाओं और निरंतर प्रासंगिकता का संतुलित मूल्यांकन करना है।

शोध समस्या एवं अध्ययन का महत्त्व (Research Problem and Significance)

हॉब्स के राजनीतिक दर्शन की केंद्रीय समस्या यह है कि जब व्यक्ति प्राकृतिक रूप से स्वतंत्र होते हैं और उनके हितों में टकराव की संभावना रहती है, तब स्थायी राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना किस आधार पर की जा सकती है। उन्होंने इसका समाधान सामाजिक समझौते और सर्वोच्च संप्रभु सत्ता की स्थापना में खोजा। किंतु इससे एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उत्पन्न होता है कि यदि राज्य की स्थापना व्यक्तियों की सुरक्षा के लिए हुई है, तो क्या राज्य की सत्ता को असीमित अधिकार प्रदान करना उचित है? इस अध्ययन की प्रमुख समस्या हॉब्स के सामाजिक समझौता सिद्धांत और राज्य की उत्पत्ति संबंधी अवधारणा के बीच संबंधों को स्पष्ट करना तथा उनकी तार्किक संगति एवं सीमाओं का परीक्षण करना है। अध्ययन का महत्त्व इस बात में निहित है कि यह राजनीतिक सत्ता की वैधता, नागरिक स्वतंत्रता, कानून के पालन और राज्य की सुरक्षा-संबंधी भूमिका के बीच संतुलन को समझने में सहायता करता है।

अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)

1. हॉब्स के मानव-स्वभाव, प्राकृतिक अवस्था और प्राकृतिक नियमों संबंधी विचारों का विश्लेषण करना।
2. सामाजिक समझौता सिद्धांत के माध्यम से राज्य की उत्पत्ति तथा संप्रभुता की अवधारणा को स्पष्ट करना।
3. हॉब्स के सिद्धांत की तार्किक संगति, राजनीतिक उपयोगिता और सीमाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।
4. हॉब्स के विचारों की तुलना सामाजिक समझौता परंपरा के अन्य प्रमुख विचारकों से करते हुए आधुनिक राजनीतिक चिंतन में उनकी प्रासंगिकता का परीक्षण करना।

शोध प्रश्न (Research Questions)

- हॉब्स के अनुसार प्राकृतिक अवस्था में राज्य की आवश्यकता क्यों उत्पन्न होती है?
- सामाजिक समझौता राजनीतिक सत्ता को वैधता प्रदान करने में किस प्रकार सहायक है?
- हॉब्स की निरंकुश संप्रभुता की अवधारणा व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं नागरिक अधिकारों के साथ किस सीमा तक संगत है?

प्राक्कल्पनाएँ (Hypotheses)

1. हॉब्स का सामाजिक समझौता सिद्धांत राज्य की स्थापना का प्रमुख आधार मानवीय सुरक्षा और शांति की आवश्यकता को मानता है।
2. हॉब्स द्वारा समर्थित सर्वोच्च एवं अविभाज्य संप्रभुता राजनीतिक स्थिरता को प्राथमिकता देती है, किंतु व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सत्ता पर नियंत्रण के प्रश्नों को पर्याप्त रूप से हल नहीं करती।
3. हॉब्स का सिद्धांत आधुनिक राज्य की वैधता एवं राजनीतिक दायित्व को समझने में उपयोगी है, परंतु लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व और संवैधानिक सीमाओं की स्थापना के लिए इसमें संशोधन आवश्यक हैं।

शोध पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध-पत्र में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति (Descriptive and Analytical Method) अपनाई गई है। अध्ययन का आधार मुख्यतः द्वितीयक स्रोत हैं, जिनमें हॉब्स की मूल कृतियाँ, राजनीतिक दर्शन से संबंधित प्रामाणिक पुस्तकें तथा अकादमिक शोध-सामग्री सम्मिलित हैं। लेवायथन के प्रमुख तर्कों का पाठ-विश्लेषण करते हुए प्राकृतिक अवस्था, प्राकृतिक नियम, सामाजिक समझौते, संप्रभुता और राजनीतिक दायित्व की अवधारणाओं का परीक्षण किया गया है। साथ ही, लॉक और रूसो के विचारों से तुलनात्मक संदर्भ लेकर हॉब्स के सिद्धांत की विशेषताओं तथा सीमाओं को स्पष्ट किया गया है।

साहित्य का पुनरावलोकन (Review of Literature)

हॉब्स के राजनीतिक दर्शन पर उपलब्ध साहित्य में मानव-स्वभाव, प्राकृतिक अवस्था, सामाजिक समझौते और संप्रभु सत्ता की व्याख्या प्रमुख रूप से की गई है :

थॉमस हॉब्स (1651), लेवायथन (Leviathan): यह अध्ययन का प्राथमिक स्रोत है। इसमें प्राकृतिक अवस्था, प्राकृतिक नियम, सामाजिक समझौते, संप्रभुता और राज्य के उद्देश्य का व्यवस्थित विवेचन मिलता है।

माइकल ओकशॉट (1946), "Introduction to Leviathan": हॉब्स के राजनीतिक दर्शन की व्याख्या में ओकशॉट का योगदान उल्लेखनीय है। उनकी व्याख्या हॉब्स की राजनीतिक व्यवस्था को केवल सत्ता की वकालत के रूप में देखने के बजाय उसके दार्शनिक आधारों को समझने में सहायक है।

सी. बी. मैकफर्सन (1962), द पॉलिटिकल थ्योरी ऑफ पज़ेसिव इंडिविजुअलिज़्म: मैकफर्सन ने हॉब्स सहित आधुनिक उदार राजनीतिक चिंतन में व्यक्ति, स्वार्थ और सामाजिक संबंधों की भूमिका का विश्लेषण किया। यह दृष्टिकोण हॉब्स की मानव-स्वभाव संबंधी मान्यताओं की आलोचनात्मक पड़ताल में उपयोगी है।

रिचर्ड टक (1989), हॉब्स: टक ने हॉब्स के राजनीतिक विचारों और उनके ऐतिहासिक-बौद्धिक संदर्भों का अध्ययन किया। इससे हॉब्स की संप्रभुता एवं राजनीतिक दायित्व संबंधी अवधारणाओं को व्यापक संदर्भ में समझने में सहायता मिलती है।

स्टैनफोर्ड इनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी में हॉब्स के नैतिक एवं राजनीतिक दर्शन पर अध्ययन: इसमें प्राकृतिक अवस्था, प्राकृतिक नियमों, सामाजिक समझौते और संप्रभु सत्ता के संबंधों की विस्तृत दार्शनिक व्याख्या की गई है। यह हॉब्स के सिद्धांत की प्रमुख व्याख्याओं और विवादित पक्षों को समझने का महत्त्वपूर्ण अकादमिक स्रोत है।

उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट होता है कि हॉब्स का सिद्धांत आधुनिक राजनीतिक सत्ता की वैधता और राज्य की आवश्यकता को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है। फिर भी, इस शोध में विशेष रूप से सुरक्षा और संप्रभुता के बीच संबंध, नागरिक स्वतंत्रता की सीमाएँ तथा लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व के संदर्भ में सिद्धांत की आलोचनात्मक संगति पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

शोध-अंतराल (Research Gap)

हॉब्स के सामाजिक समझौता सिद्धांत पर उपलब्ध साहित्य में प्राकृतिक अवस्था, संप्रभुता और राजनीतिक दायित्व का व्यापक विवेचन मिलता है। प्रस्तुत अध्ययन का विशिष्ट केंद्र इन अवधारणाओं के पारस्परिक संबंध का आलोचनात्मक परीक्षण है। इसमें विशेष रूप से यह समझने का प्रयास किया गया है कि सुरक्षा के लिए आवश्यक प्रभावी सत्ता और नागरिक स्वतंत्रता तथा लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व की आवश्यकताओं के बीच किस प्रकार का वैचारिक तनाव उत्पन्न होता है।

हॉब्स के राजनीतिक दर्शन का सैद्धांतिक आधार (Theoretical Framework)

हॉब्स का राजनीतिक दर्शन मुख्यतः तीन परस्पर संबंधित आधारों पर विकसित हुआ है :

प्रथम, मानव-स्वभाव की अवधारणा: हॉब्स मनुष्य को इच्छाओं, भय, प्रतिस्पर्धा और आत्मरक्षा की प्रवृत्ति से प्रेरित प्राणी मानते हैं। मनुष्य शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं में इतना समान है कि कोई व्यक्ति स्वयं को पूर्णतः सुरक्षित नहीं मान सकता। यही समानता परस्पर अविश्वास और संघर्ष की संभावना उत्पन्न करती है। द्वितीय, प्राकृतिक नियम एवं विवेक: हॉब्स के अनुसार, विवेक व्यक्ति को यह समझने में सहायता करता है कि निरंतर संघर्ष उसके जीवन और हितों के प्रतिकूल है। शांति की खोज, समझौतों का पालन और पारस्परिक सहयोग प्राकृतिक नियमों के प्रमुख निष्कर्ष हैं। किंतु इन नियमों का प्रभावी पालन सुनिश्चित करने के लिए एक ऐसी सार्वजनिक सत्ता आवश्यक है, जो उल्लंघन की स्थिति में दंड दे सके।

तृतीय, सामाजिक समझौता एवं संप्रभुता: व्यक्ति परस्पर समझौते के माध्यम से किसी व्यक्ति अथवा सभा को सार्वजनिक अधिकार प्रदान करते हैं। इस प्रकार राजनीतिक सत्ता का निर्माण होता है। हॉब्स के लिए राज्य का प्रमुख उद्देश्य शांति और सुरक्षा की स्थापना है, जबकि संप्रभु सत्ता इस व्यवस्था को बनाए रखने का साधन है।

प्राकृतिक अवस्था एवं राज्य की आवश्यकता (State of Nature and the Need for the State)

हॉब्स के सिद्धांत में प्राकृतिक अवस्था राज्य की उत्पत्ति को समझने का आधार है। यह ऐसी काल्पनिक स्थिति है जिसमें कोई साझा राजनीतिक प्राधिकार नहीं होता, जो व्यक्तियों के विवादों का अंतिम निर्णय कर सके अथवा कानूनों का प्रभावी पालन सुनिश्चित कर सके। इसका अर्थ यह नहीं है कि इस अवस्था में मनुष्यों के बीच प्रत्येक समय वास्तविक युद्ध चल रहा होता है; बल्कि युद्ध की निरंतर संभावना और परस्पर असुरक्षा इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। हॉब्स ने संघर्ष के तीन प्रमुख कारण बताए–प्रतिस्पर्धा, अविश्वास और यश अथवा प्रतिष्ठा की आकांक्षा। प्रतिस्पर्धा व्यक्ति को लाभ प्राप्त करने के लिए दूसरों के विरुद्ध कार्रवाई के लिए प्रेरित कर सकती है। अविश्वास आत्मरक्षा के नाम पर पहले आक्रमण करने की प्रवृत्ति उत्पन्न कर सकता है, जबकि प्रतिष्ठा का संघर्ष विवादों को और बढ़ा सकता है। किसी साझा सत्ता के अभाव में इन प्रवृत्तियों को नियंत्रित करने वाली प्रभावी व्यवस्था नहीं होती।

इस परिस्थिति में व्यक्ति के जीवन, श्रम और उपलब्धियों की सुरक्षा अनिश्चित हो जाती है। स्थायी आर्थिक गतिविधियों, सामाजिक सहयोग और सांस्कृतिक विकास के लिए आवश्यक विश्वास कमजोर पड़ता है। इसलिए हॉब्स की प्राकृतिक अवस्था केवल हिंसा की संभावना का वर्णन नहीं है, बल्कि उस राजनीतिक समस्या को सामने लाती है जिसमें सुरक्षा के अभाव में स्वतंत्रता का व्यावहारिक उपयोग भी कठिन हो जाता है।

हॉब्स के अनुसार, प्राकृतिक अवस्था से बाहर निकलने का मार्ग विवेकपूर्ण समझौता है। व्यक्ति यह अनुभव करते हैं कि सभी को सभी वस्तुओं पर असीमित अधिकार प्राप्त होने की स्थिति में कोई भी स्थायी रूप से सुरक्षित नहीं रह सकता। अतः वे अपनी कुछ प्राकृतिक स्वतंत्रताओं को सीमित करने और एक सामान्य राजनीतिक सत्ता स्थापित करने के लिए सहमत होते हैं। इसी प्रक्रिया से राज्य की स्थापना का सैद्धांतिक आधार निर्मित होता है।

सामाजिक समझौता सिद्धांत एवं राज्य की उत्पत्ति (Social Contract Theory and the Origin of the State)

हॉब्स का सामाजिक समझौता सिद्धांत इस मान्यता पर आधारित है कि राज्य की स्थापना किसी दैवी आदेश या परंपरागत अधिकार के बजाय व्यक्तियों के विवेकपूर्ण निर्णय से समझी जा सकती है। यह समझौता प्राकृतिक अवस्था की असुरक्षा से निकलकर राजनीतिक व्यवस्था स्थापित करने का माध्यम है।

हॉब्स के अनुसार, व्यक्ति एक-दूसरे के साथ समझौता करते हैं कि वे अपनी निजी निर्णय-शक्ति और कुछ प्राकृतिक अधिकारों के प्रयोग को एक सामान्य संप्रभु सत्ता के अधीन स्वीकार करेंगे। यहाँ एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि समझौता मुख्यतः व्यक्तियों के बीच होता है; संप्रभु स्वयं इस मूल समझौते का पक्षकार नहीं होता। इसीलिए हॉब्स की व्यवस्था में संप्रभु पर समझौते के आधार पर उसी प्रकार दायित्व नहीं लगाया जा सकता, जिस प्रकार समझौते में शामिल व्यक्तियों पर लगाया जाता है। हॉब्स ने संप्रभुता की स्थापना के दो रूपों को स्वीकार किया है:

- संस्था द्वारा संप्रभुता (Sovereignty by Institution): जब व्यक्ति आपसी सहमति से किसी व्यक्ति या सभा को संप्रभु सत्ता प्रदान करते हैं।
- अधिग्रहण द्वारा संप्रभुता (Sovereignty by Acquisition): जब व्यक्ति किसी शक्तिशाली सत्ता के भय से उसकी आज्ञा स्वीकार करते हैं, क्योंकि वे उससे सुरक्षा प्राप्त करना चाहते हैं।

हॉब्स के अनुसार, दोनों स्थितियों में राजनीतिक आज्ञाकारिता का मूल आधार सुरक्षा है। इस प्रकार राज्य की वैधता का व्यावहारिक औचित्य उसकी शांति एवं संरक्षण प्रदान करने की क्षमता से जुड़ जाता है।

यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि हॉब्स का सामाजिक समझौता आवश्यक रूप से किसी वास्तविक ऐतिहासिक घटना का विवरण नहीं है। इसे मुख्यतः एक दार्शनिक तर्क के रूप में समझना चाहिए, जिसके माध्यम से वे बताते हैं कि विवेकशील व्यक्ति राजनीतिक सत्ता की स्थापना को क्यों स्वीकार कर सकते हैं। इस अर्थ में उनका सिद्धांत राज्य की उत्पत्ति की ऐतिहासिक व्याख्या से अधिक राजनीतिक सत्ता के औचित्य की व्याख्या प्रस्तुत करता है।

संप्रभुता एवं राज्य के कार्य (Sovereignty and Functions of the State)

हॉब्स के राजनीतिक दर्शन में संप्रभुता राज्य की केंद्रीय विशेषता है। उनके अनुसार, यदि अंतिम निर्णय लेने की शक्ति विभिन्न संस्थाओं के बीच इस प्रकार विभाजित हो जाए कि कोई भी सत्ता विवादों का अंतिम समाधान न कर सके, तो राजनीतिक संघर्ष दोबारा उत्पन्न हो सकता है। इसलिए उन्होंने संप्रभु सत्ता को सर्वोच्च, एकीकृत और

प्रभावी माना। संप्रभु के प्रमुख कार्यों में कानून बनाना, न्यायिक निर्णयों की व्यवस्था करना, शांति बनाए रखना, बाहरी आक्रमण से सुरक्षा प्रदान करना तथा सार्वजनिक व्यवस्था को नियंत्रित करना सम्मिलित हैं। हॉब्स की दृष्टि में कानून केवल नैतिक उपदेश नहीं है; उसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि उसे लागू करने वाली प्रभावी सत्ता मौजूद हो। हॉब्स ने संप्रभुता के लिए राजतंत्र को उपयुक्त माना, लेकिन उनकी अवधारणा में संप्रभु सत्ता किसी एक व्यक्ति तक सीमित नहीं है। वह किसी सभा में भी निहित हो सकती है। इसलिए उनके सिद्धांत का केंद्रीय तत्त्व किसी विशेष शासन-रूप की अपेक्षा सत्ता की सर्वोच्चता और अविभाज्यता है।

फिर भी, हॉब्स की संप्रभुता को पूर्णतः निरंकुश मानते समय उनके विचारों की एक अन्य विशेषता पर भी ध्यान देना आवश्यक है। उन्होंने आत्मरक्षा के प्राकृतिक अधिकार को पूरी तरह समाप्त नहीं माना। यदि किसी व्यक्ति के जीवन पर प्रत्यक्ष खतरा हो, तो वह अपनी रक्षा करने की स्वतंत्रता नहीं खोता। इसके अतिरिक्त, राजनीतिक आज्ञाकारिता का औचित्य सुरक्षा से जुड़ा है; संरक्षण देने की क्षमता समाप्त होने पर आज्ञाकारिता का आधार भी प्रभावित होता है। इससे स्पष्ट होता है कि हॉब्स के सिद्धांत में संप्रभु सत्ता व्यापक होने के बावजूद सुरक्षा और आत्मरक्षा की समस्या केंद्रीय बनी रहती है।

हॉब्स के सिद्धांत का आलोचनात्मक विश्लेषण (Critical Analysis of Hobbes's Theory)

हॉब्स के सिद्धांत ने आधुनिक राजनीतिक चिंतन को राज्य की आवश्यकता, सत्ता की वैधता और नागरिक आज्ञाकारिता पर विचार करने का एक प्रभावशाली आधार दिया। तथापि, इसकी कुछ सीमाएँ भी हैं :

1. **मानव-स्वभाव का निराशावादी चित्रण:** हॉब्स ने प्रतिस्पर्धा, भय और स्वार्थ को विशेष महत्त्व दिया। ये प्रवृत्तियाँ मानव व्यवहार का हिस्सा अवश्य हैं, लेकिन सहयोग, सहानुभूति, परोपकार और सामाजिक विश्वास भी मानवीय जीवन के महत्वपूर्ण पक्ष हैं। इसलिए प्राकृतिक अवस्था का उनका चित्रण मानवीय संबंधों की जटिलता को पूरी तरह व्यक्त नहीं करता।
2. **राज्य की उत्पत्ति की ऐतिहासिक सीमा:** हॉब्स का सामाजिक समझौता सिद्धांत मुख्यतः दार्शनिक और काल्पनिक तर्क है। राज्य की वास्तविक ऐतिहासिक उत्पत्ति को केवल व्यक्तियों के समझौते से नहीं समझाया जा सकता, क्योंकि राज्य विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सैन्य और ऐतिहासिक प्रक्रियाओं से विकसित हुए हैं। इस दृष्टि से हॉब्स का सिद्धांत राजनीतिक सत्ता के औचित्य को समझाने में अधिक उपयोगी है, न कि प्रत्येक राज्य के वास्तविक ऐतिहासिक विकास का वर्णन करने में।
3. **निरंकुश संप्रभुता की समस्या:** हॉब्स ने राजनीतिक स्थिरता के लिए संप्रभु सत्ता को व्यापक अधिकार प्रदान किए। किंतु यदि सत्ता पर प्रभावी नियंत्रण न हो, तो शांति और व्यवस्था के नाम पर मनमानी, दमन तथा नागरिक स्वतंत्रताओं के हनन की संभावना उत्पन्न हो सकती है। उनके सिद्धांत में सत्ता के संवैधानिक विभाजन और संस्थागत नियंत्रण के लिए पर्याप्त स्थान नहीं मिलता।

4. **नागरिक सहमति एवं लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व:** हॉब्स का सिद्धांत राजनीतिक सत्ता की स्थापना में सहमति को महत्व देता है, लेकिन संप्रभु की निरंतर लोकतांत्रिक जवाबदेही पर उतना बल नहीं देता। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में केवल प्रारंभिक सहमति पर्याप्त नहीं मानी जाती; स्वतंत्र चुनाव, कानून का शासन, न्यायिक समीक्षा, मौलिक अधिकार और संस्थागत उत्तरदायित्व भी आवश्यक हैं।
5. **अन्य सामाजिक समझौता विचारकों से तुलना:** जॉन लॉक ने जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति की रक्षा के लिए सीमित सरकार तथा शासक के विरुद्ध प्रतिरोध के अधिकार पर बल दिया। रूसो ने सामान्य इच्छा और जनसत्ता को प्रमुख स्थान दिया। इसके विपरीत, हॉब्स ने शांति और सुरक्षा के लिए सर्वोच्च संप्रभु सत्ता को प्राथमिकता दी। इस तुलना से स्पष्ट होता है कि सामाजिक समझौते की परंपरा एक समान राजनीतिक निष्कर्ष तक नहीं पहुँचती, बल्कि स्वतंत्रता, समानता, सुरक्षा और सत्ता के संबंधों पर विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

इन सीमाओं के बावजूद, हॉब्स की प्रमुख उपलब्धि यह है कि उन्होंने राज्य की आवश्यकता को भय या परंपरा के बजाय राजनीतिक व्यवस्था की समस्या और मानवीय सुरक्षा की आवश्यकता से जोड़कर समझाया। उनका सिद्धांत यह भी स्पष्ट करता है कि प्रभावी कानून और संस्थागत क्षमता के अभाव में अधिकारों की व्यावहारिक सुरक्षा कठिन हो सकती है।

सुझाव (Suggestions)

1. हॉब्स के सिद्धांत का अध्ययन करते समय सुरक्षा और राजनीतिक स्थिरता के महत्व को स्वीकार करते हुए सत्ता की संवैधानिक सीमाओं पर भी विचार किया जाना चाहिए।
2. आधुनिक राज्य में कानून का शासन, स्वतंत्र न्यायपालिका, मौलिक अधिकार और लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व सुरक्षा तथा स्वतंत्रता के बीच संतुलन स्थापित करने के आवश्यक साधन हैं।
3. सामाजिक समझौते की अवधारणा को केवल आज्ञाकारिता के आधार के रूप में नहीं, बल्कि राज्य और नागरिकों के पारस्परिक दायित्वों तथा जनसहमति की निरंतरता के संदर्भ में भी समझा जाना चाहिए।

निष्कर्ष (Conclusion)

अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं:

1. हॉब्स के अनुसार, प्राकृतिक अवस्था में असुरक्षा और संघर्ष की संभावना राजनीतिक सत्ता की स्थापना के लिए प्रमुख प्रेरक तत्व हैं।
2. सामाजिक समझौता व्यक्तियों की सुरक्षा और शांति की आवश्यकता को राज्य की स्थापना का तार्किक आधार प्रदान करता है।
3. हॉब्स की संप्रभुता संबंधी अवधारणा कानून लागू करने तथा राजनीतिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रभावी और एकीकृत सत्ता पर बल देती है।

4. सिद्धांत की सबसे बड़ी सीमा यह है कि वह राजनीतिक स्थिरता को प्राथमिकता देते हुए सत्ता के दुरुपयोग की रोकथाम, लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व और नागरिक स्वतंत्रताओं के संस्थागत संरक्षण पर अपेक्षाकृत कम बल देता है।
5. हॉब्स के विचारों का आधुनिक महत्त्व राज्य की सुरक्षा-संबंधी भूमिका और राजनीतिक सत्ता के औचित्य को समझने में है, न कि निरंकुश शासन को बिना शर्त स्वीकार करने में।

थॉमस हॉब्स का सामाजिक समझौता सिद्धांत आधुनिक राजनीतिक दर्शन में राज्य की उत्पत्ति और राजनीतिक सत्ता की वैधता की व्याख्या करने वाला एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि प्राकृतिक अवस्था में असुरक्षा और संघर्ष की संभावना से बचने के लिए व्यक्ति एक साझा संप्रभु सत्ता की स्थापना करते हैं। इस प्रकार राज्य की आवश्यकता को दैवी अधिकार या परंपरागत मान्यताओं के स्थान पर मानवीय विवेक, आत्मरक्षा और शांति की आवश्यकता से जोड़ा गया।

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि हॉब्स की संप्रभुता की अवधारणा राजनीतिक व्यवस्था को स्थिरता प्रदान करने का सशक्त तर्क प्रस्तुत करती है। प्रभावी कानून, दंड की व्यवस्था और विवादों के अंतिम समाधान के लिए सक्षम सार्वजनिक सत्ता की आवश्यकता आज भी प्रासंगिक है। तथापि, राज्य की शक्ति को व्यापक और अविभाज्य बनाने से व्यक्तिगत स्वतंत्रता, नागरिक अधिकारों तथा सत्ता के दुरुपयोग से संबंधित समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए हॉब्स के सिद्धांत को उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और दार्शनिक उद्देश्य के साथ समझना आवश्यक है।

अंततः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हॉब्स का सिद्धांत राजनीतिक व्यवस्था और सुरक्षा की अनिवार्यता को प्रभावी ढंग से स्पष्ट करता है, लेकिन आधुनिक लोकतांत्रिक राज्य के लिए सुरक्षा के साथ स्वतंत्रता, संवैधानिक नियंत्रण और उत्तरदायित्व का संतुलन भी आवश्यक है। इस अर्थ में हॉब्स का राजनीतिक दर्शन न केवल राज्य की शक्ति को समझने का आधार प्रदान करता है, बल्कि यह प्रश्न भी उठाता है कि राज्य की शक्ति को किस सीमा तक स्वीकार किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. हॉब्स, थॉमस., (1651), लेवायथन: द मैटर, फॉर्म एंड पावर ऑफ अ कॉमनवेल्थ, एक्लेसियास्टिकल एंड सिविल,. एंड्रयू क्रूक.
2. हॉब्स, थॉमस., (1642/1998), ऑन द सिटिजन [De Cive]. रिचर्ड टक (सम्पा.), कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
3. ओकशॉट, माइकल. (1946). Introduction to Leviathan, बेसिल ब्लैकवेल.
4. मैकफर्सन, सी. बी., (1962), द पॉलिटिकल थ्योरी ऑफ पज़ेसिव इंडिविजुअलिज़्म: हॉब्स टू लॉक, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
5. टक, रिचर्ड. (1989). हॉब्स, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
6. लॉक, जॉन. (1689/1988). टू ट्रीटीज़ ऑफ गवर्नमेंट,पीटर लैसलेट (सम्पा.). कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
7. रूसो, जाँ-जाक. (1762/1997). द सोशल कॉन्ट्रैक्ट एंड अदर लेटर पॉलिटिकल राइटिंग्स, विक्टर गौरेविच (अनु. एवं सम्पा.). कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

8. गॉथियर, डेविड. (1969). द लॉजिक ऑफ लेवायथन: द मॉरल एंड पॉलिटिकल थ्योरी ऑफ थॉमस हॉब्स, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
9. हैम्पटन, जीन. (1986). हॉब्स एंड द सोशल कॉन्ट्रैक्ट ट्रेडिशन, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
10. कावर्ड, हेरोल्ड जी. (1998). डेमोक्रेसी एंड गवर्नमेंट: ए कॉम्पेरेटिव एनालिसिस, संबंधित संस्करण के प्रकाशन-विवरण की पुष्टि आवश्यक है।
11. गागिन, जॉन. (1995). द ऑक्सफोर्ड कम्पैनियन टू फिलॉसफी, टेड हॉन्डरिच (सम्पा.). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
12. लॉयड, शेरोन ए., एवं स्रज़ेडनिक, सुसान. (2023). Hobbes's Moral and Political Philosophy. स्टैनफोर्ड इनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी. ऑनलाइन अकादमिक स्रोत.

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA



Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM